3

प्रातः कालीन स्तुति - देववंदन

महादेव्याः कुक्षिरत्नं, शब्दजीतरवात्मजम्।
राजचन्द्रम् अहम् वंदे, तत्त्वलोचनदायकम् ।।1।।

जय गुरुदेव! सहजात्मस्वरूप परम गुरु शुद्ध चैतन्य स्वामी ।।2।।

ॐ कारं बिंदु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐ काराय नमोनमः ।।3।।

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
नमूँ ताहि जाते भये, अरिहंत आदि महान ।।4।।

विश्वभाव व्यापि तदपि, एक विमल चिद्रूप।
ज्ञानानंद महेश्वरा, जयवंता जिनभूप ।।5।।

महत्तत्व महनीय महः महाधाम गुणधाम।
चिदानंद परमात्मा, वंदो रमताराम ।।6।।

तीनभुवन चूड़ारतन, सम श्री जिन के पाय।
नमत पाइये आप पद, सब विधि बंध नशाय ।।7।।

नमूं भक्तिभावे ऋषभ, जिन शांति अघ हरो।
तथा नेमि पार्श्व प्रभु, मम सदा मंगल करो ।।8।।

महावीर स्वामी, भुवनपति काटो कुमति को।
जिन शेष जो हैं सकल, देना मुझ सुमति को ।।9।।

अर्हंतो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः
पंचै ते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ।।10।।

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि - प्रभाणा -
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपाद - युगं युगादा
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।।11।।

यः संस्तुतः सकल - वाङ्मय - तत्त्वबोधा -
दुद्भूत बुद्धि - पटुभिः सुरलोक नाथैः।
स्तोत्रेर्जगत् त्रितय चित्त - हरै रुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।12।।

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ।।13।।

दर्शनाद् दुरितध्वंसि, वंदनाद् वांच्छितप्रदः।
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ।।14।।

प्रभुदर्शन सुखसंपदा, प्रभुदर्शन नवनिधि।
प्रभुदर्शन से पाइये, सकल मनोरथ - सिद्धि ।।15।।

जीवों जिनवर पूजिये, पूजा के फल होय।
राज नमे प्रजा नमे, आज्ञा न लोपे कोय ।।16।।

कुंभ में रहता जल है, जल बिन कुंभ न होय।
ज्ञान से बंधता मन है, गुरु बिन ज्ञान न होय ।।17।।

गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु बिन घोर अंधकार।
जो गुरुवाणी न मिले, भटकत हैं संसार ।।18।।

तन से मन से वचन से, देत न कोई दुःख।
कर्म रोग पातिक जरे, निरखत सद्गुरु मुख ।।19।।

तरुवर से फल गिर पड़ा, बुझी न मन की प्यास ।
गुरु छोड़ी गोविन्द भजे, मिटे न गर्भावास ।।20।।

भाव से जिनवर पूजिये, भाव से दीजे दान ।
भाव से भावना कीजिये, भाव से केवल ज्ञान ।।21।।

त्वं माता त्वं पिता चैव, त्वं गुरुस्त्वं बांधवः
त्वमेकः शरणं स्वामिन्, जीवितं जीवितेश्वरः ।।22।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव भ्राता च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।23।।

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभवज जन्माभिषेकोत्सवे
यद् दीक्षा ग्रहणोत्सवे यदखिल ज्ञान प्रकाशोत्सवे
यन्निर्वाण गमोत्सवे जिनपतेः पूजाद्भुतं तद् भवैः
संगीत स्तुति मंगलैः प्रसरतां मे सुप्रभातोत्सवः ।।24।।